खण्ड–5, अंक–1, वर्ष–2017, मु0पृ0 118–121, D.O.I. : 10.22445/avsp.v5i01.9862 समीक्षा एवं तकनीकी आलेख

आधुनिक शिक्षा पद्धति में पर्यावरण शिक्षा का महत्व

अंजली द्विवेदी[1] एवं मोहित कुमार तिवारी[2]
[1]शिक्षाशास्त्र विभाग, सिटी ग्रुप ऑफ कॉलेजेस, तिवारी गंज, लखनऊ–226028, उ0प्र0, भारत
[2]जीव विज्ञान विभाग, लखनऊ क्रिश्चियन कॉलेज, लखनऊ–226018, उ0प्र0, भारत
deepanjali2010@gmail.com, drmohit2008@gmail.com

प्राप्त तिथि–30.06.2017, स्वीकृत तिथि–25.09.2017

सार– पर्यावरण पृथ्वी के समस्त जीवधारियों के जीवन को प्रभावित और निर्धारित करता है। पर्यावरण केवल जीवन का आधार ही नहीं वरन् जीवन को प्रभावित करने वाला कारक भी है, जो मुख्यतः दो भागों अजैविक व जैविक कारक, में विभक्त किया गया है। जैविक कारकों में मानव ही एक ऐसा घटक है जो पर्यावरण के समस्त घटकों को गम्भीर रूप से प्रभावित करता है। मनुष्य की पर्यावरण एवं पारिस्थितिकी तंत्र को असंतुलित एवं नष्ट करने में महत्वपूर्ण भूमिका है। पर्यावरण मानव जीवन को ही नहीं वरन् पृथ्वी पर उपस्थित अन्य जीव–जन्तुओं एवं पेड़–पौधों के जीवन को भी प्रभावित करता है। अतएव यह आवश्यक है कि मनुष्य को पर्यावरण के महत्व के विषय में आवश्यक ज्ञान दिया जाय। पर्यावरणीय अध्ययन केवल विज्ञान वर्ग के छात्रों का अध्ययन विषय न होकर समस्त विद्यार्थियों के लिए आवश्यक है। विद्यार्थियों को बाल्यावस्था से ही वातावरण के महत्व एवं उसके संरक्षण के विषय में बताया जाय जो केवल वर्तमान के लिए ही नहीं अपितु पृथ्वी के सुरक्षित भविष्य के लिए भी आवश्यक है। अतः पर्यावरण अध्ययन को शिक्षा के सभी स्तरों के पाठ्यक्रम में आवश्यक रूप से सम्मिलित किया जाना चाहिए।

बीज शब्द– पर्यावरण, पारिस्थितिकी तंत्र, जैविक कारक, अजैविक कारक।

Importance of environment education in modern education system

Anjali Dwivedi[1] and Mohit Kumar Tiwari[2]
[1]Department of Education City Group of Colleges
Tiwariganj, Lucknow-226028, U.P., India
[2]Department of Biological Sciences, Lucknow Christian College
Lucknow-226018, U.P., India
deepanjali2010@gmail.com, drmohit2008@gmail.com

Abstract– Environment regulates and affects the life besides, all the vital activities on the earth. It is not only the fundamental basis of life but also helps in controlling the activities of living organism. Environment is mainly divided into abiotic and biotic components. Among biotic components man itself is the major culprit which severely affects all other components of the environment. Man plays the major role in disturbing and destroying the natural ecosystem which not only affects the human life but also the life of other plants and animals on the earth. That is why it is now very important to make the human beings aware about the environment. Study of environment is not only the subject of study for science students, but is also necessarily to be taught and informed every human being from his early childhood to make him understand how to protect and maintain the environment not only for himself but also for the safe future of the earth. Therefore, it is necessary to introduce study of environment in the syllabus of all levels of education.

Key words- Environment, Eco-system, biological components, non-biological components.

1. **प्रस्तावना–** वातावरण एक प्राकृतिक परिवेश है जो पृथ्वी पर जीवन को सुरक्षित एवं संरक्षित ररवने में योगदान करता है। प्राकृतिक वातावरण, इस धरती पर जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने में एक बड़ी भूमिका निभाता है और यह मनुष्यों सहित समस्त जीव–जन्तुओं व पेड़–पौधों को स्वाभाविक रूप से विकसित होने में सहायता करता है। परन्तु मनुष्य के लोभ और स्वार्थी गतिविधियों के कारण हमारा पर्यावरण गम्भीर रूप से प्रभावित हो रहा है। यह एक महत्वपूर्ण विषय है और हर किसी को पर्यावरण को बचाने और इसे सुरक्षित रखने के बारे में जानना चाहिए ताकि इस ग्रह पर जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए प्रकृति का संतुलन सुनिश्चित हो सके। हमें हमारे पर्यावरण को स्वस्थ और प्रदूषण से दूर रखने के लिए अपने स्वार्थ और गलतियों को सुधारना होगा। यह विश्वास करना मुश्किल है, लेकिन सच है कि हर किसी द्वारा छोटी–छोटी नकारात्मक गतिविधियों के कारण पर्यावरण में बड़ा बदलाव आया है जो दिन–प्रतिदिन गम्भीर रूप से बढ़ रहा है[1,2]। अतः यह आवश्यक हो गया है कि प्रत्येक मनुष्य को पर्यावरण संरक्षण हेतु शिक्षित एवं

सहभागी बनाया जाय। पर्यावरण संरक्षण हेतु प्रत्येक स्तर के शिक्षा पाठयक्रम में पर्यावरण अध्ययन को आवश्यक रूप से सम्मिलित किया जाना सुनिश्चित होना चाहिये।

2. **पर्यावरण के घटक–** पर्यावरण के घटकों को मुख्यतः दो वर्गो में विभाजित किया गया है–

अ. **भौतिक/अजैविक घटक**– जिसके अन्तर्गत भूमि, जल, वायु, प्रकाश, ताप इत्यादि सम्मिलित हैं।
ब. **जैविक घटक**– पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, जीवाणु, विषाणु एवं इनके उत्पाद, मानव व उसके क्रियाकलाप, संस्थाएँ एवं व्यवस्थाएँ इत्यादि।
उपरोक्त घटकों को पुनः छः वर्गों में विभाजित किया गया है–
1. **भौतिक घटक**– भूमि, जल, वायु एवं ताप व प्रकाश।
2. **जैविक घटक**– पेड़–पौधे, जीव–जन्तु, जीवाणु, विषाणु, मानव।
3. **सामाजिक घटक**– जनसंख्या, सामाजिक प्रणाली, शहरीकरण, औद्योगीकरण।
4. **सांस्कृतिक घटक**– आर्थिक तत्व, राजनैतिक तत्व, नैतिक मूल्य, धार्मिक मूल्य आदि।
5. **मनोवैज्ञानिक घटक**– स्वप्रत्यय, जीवन विस्तार, जीवन लक्ष्य, जीवन शैली।
6. **ऊर्जा स्तर**– सौर ऊर्जा, पवन ऊर्जा तथा पृथ्वी की गुरूत्वीय ऊर्जा।

3. **पर्यावरण शिक्षा**– पर्यावरण शिक्षा दो शब्दों पर्यावरण तथा शिक्षा शब्दों का योग है। इन दोनों शब्दों के अर्थों को पृथक–पृथक समझना आवश्यक है–

शिक्षा का अर्थ– मानव जीवन में शिक्षा का महत्वपूर्ण स्थान है। शिक्षा ही एकमात्र वह साधन है जिसने मनुष्य को सभ्य बनाया, उसको सामाजिक और सांस्कृतिक विकास के योग्य बनाया।आज का वैज्ञानिक, प्राविधिक और आर्थिक विकास शिक्षा की ही देन है। इसी कारण शिक्षा को एक विकास की क्रिया के रूप में स्वीकार किया जाता है। शिक्षा बालक में निहित गुणों तथा क्षमताओं का विकास करके उसे पर्यावरण के साथ समायोजन करने की कला में निपुण बनाती है।

पर्यावरण का अर्थ– समस्त जीवधारियों के आस–पास का परिआवरण अथवा वातावरण पर्यावरण कहलाता है। पर्यावरण भौतिक एवं जैविक शक्तियों की समष्टि है जो मनुष्य के विकास, चिन्तन तथा क्रियाओं को सदैव प्रभावित करती है। पर्यावरण किसी एक कारक का नाम नहीं यह अनेक कारकों जैसे– धरातल, मृदा, जल, वायु, खनिज, वनस्पति आदि का योग है, जिसमें पृथ्वी के समस्त जीवधारियों का समान अधिकार है। पर्यावरण और शिक्षा शब्दों के अर्थ को समझने के बाद स्पष्ट है कि दोनों में विकास को महत्व दिया जाता है। पर्यावरण में वातावरण की गुणवत्ता तथा शिक्षा में व्यक्ति की गुणवत्ता के विकास पर बल दिया जाता है। पर्यावरण तथा शिक्षा दोनों घनिष्ट रूप में सम्बन्धित है तथा बालक/बालिका के विकास को दोनों सम्मिलित रूप से प्रभावित करते है। सर्वप्रथम बच्चे अपने घर के पर्यावरण में पोषण प्राप्त करते हैं, तत्पश्चात् विद्यालय, समाज आदि के सम्पर्क में आने पर प्राकृतिक वातावरण के सम्पर्क में आकर विकसित होते हैं। बालक के विकास में पर्यावरण महत्वपूर्ण भूमिका प्रदान करता है। अतः यह आवश्यक है कि बालक को स्वस्थ पर्यावरण प्रदान करने हेतु पर्यावरण से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान किया जाये जिससे वह पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनकर इसके संरक्षण में योग दे सके।[3,4]

पर्यावरण शिक्षा का अर्थ एवं परिभाषा– जो शिक्षा हमें **पर्यावरण** से सम्बन्धित ज्ञान प्रदान करती है उसे पर्यावरण शिक्षा कहते हैं। पर्यावरण शिक्षा व्यक्ति को पर्यावरण से अनुकूलन **ही** नहीं सिखाती अपितु आवश्यकता पड़ने पर पर्यावरण को स्वयं के अनुकूल बनाने सम्बन्धी ज्ञान भी प्रदान करती है। इसके द्वारा व्यक्ति को पर्यावरण संरक्षण करने में सक्षम बनाया जा सकता है। पर्यावरण शिक्षा जनमानस को पर्यावरण के प्रति सचेत करती है। संयुक्त राष्ट्र अमेरिका के पर्यावरण शिक्षा अधिनियम–1970 में कहा गया है– ''पर्यावरण शिक्षा से तात्पर्य उस शिक्षा से है जो मानव का सम्बन्ध उसके प्राकृतिक व स्वनिर्मित वातावरण से स्थापित करती है जिससे जनसंख्या प्रदूषण, संसाधन आंवटन व निःशोषण संरक्षण, यातायात प्रौद्योगिकी तथा शहरी व ग्रामीण नियोजन का समस्त मानवीय वातावरण से सम्बन्ध निहित है''।

4. **पर्यावरण का क्षेत्र–** पर्यावरण विभिन्न कारकों का सम्मिलित नाम है। इसके अन्तर्गत भौतिक और सांस्कृतिक दोनों प्रकार सम्मिलित है। पर्यावरण अध्ययन का केन्द्र बिन्दु मनुष्य है जो अपनी विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए संसाधनों का दोहन एवं शोषण करता है जिससें संसाधनों की मात्रा एवं गुणों में ह्रास तथा पर्यावरण असंतुलन, पारिस्थितिकी असंतुलन, प्रदूषण एवं जैव विविधता हानि जैसी समस्याएँ वर्तमान में जन्म ले रही है। इन समस्याओं के दुष्परिणाम स्वास्थ्य, प्राकृतिक सौन्दर्य और संसाधन समृद्धि पर पड़ रहा है। अतः इनके अधिप्रभाव का अध्ययन एवं इन समस्याओं के निदान पर्यावरण अध्ययन की विषय वस्तु है।

5. **पर्यावरण शिक्षा का केन्द्र बिन्दु**– पर्यावरण शिक्षा निम्नाकिंत पर केन्द्रित है–
1. पर्यावरण और पर्यावरणीय चुनौतियों के बारे में समझ एवं जानकारी विकसित करना।
2. पर्यावरण से सम्बन्धित चुनौतियों के बारे में जागरूकता फैलाना।
3. पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं के प्रति संवेदनशीलता उत्पन्न करना।

4. पर्यावरण के सम्बन्ध में चिंता की प्रवृत्ति और पर्यावरण की गुणवत्ता बनाये रखने में सहायता करना।
5. पर्यावरणीय समस्याओं को दूर करने की कुशलता विकसित करना।
6. पर्यावरणीय संरक्षण में भागीदारी सुनिश्चित करना।
7. मौजूदा ज्ञान और पर्यावरण से संबधित कार्यक्रमों के अभ्यास में भागीदारी सुनिश्चित करना।

6. **पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व**– पर्यावरणीय शिक्षा की आवश्यकता तथा महत्व को निम्न बिन्दुओं के द्वारा समझा जा सकता है–

1. पर्यावरण शिक्षा जनमानस की पर्यावरण के प्रति सोच एवं उसके प्रति व्यवहार में परिवर्तन लाने हेतु।
2. जन सामान्य को पर्यावरण के प्रति संवेदनशील बनाने में ।
3. पर्यावरण की सीमाओं की जानकारी प्रदान करने के लिए।
4. पर्यावरण से जुड़ी समस्याओं के प्रति सचेत करने के लिए ।
5. पर्यावरर्णीय संसाधनों के विवेकपूर्ण उपयोग को सिखाने हेतु ।
6. जनसंख्या वृद्धि के दुष्परिणामों तथा इससे पर्यावरण पर प्रभाव के विषय में सचेत करने हेतु आवश्यक हैं।
7. मानव को संयमपूर्ण जीवन जीने की कला सिखाने में सहायक।
8. औद्योगीकरण से उत्पन्न प्रकृति में सन्तुलन की स्थिति की जानकारी देने हेतु आवश्यक है।
9. प्रकृति को विकृतियों से बचाने हेतु व्यक्ति क्या करे, क्या न करे, इससे अवगत कराने के लिए।
10. वन्य जीवन, वन, ऊर्जा एवं खनिज संसाधनों के संरक्षण के लिए ।
11. खनन से उत्पन्न असन्तुलन की जानकारी के लिए आवश्यक।
12. प्रदूषण के कारण उत्पन्न परिस्थितिकी संकट के विषय में जानकारी देने के लिए इत्यादि।

हमारे सौरमण्डल में सम्भवतः पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जहाँ जीवन सम्भव है। इस जीवन को नष्ट होने से बचाने के लिए पर्यावरण शिक्षा अति आवश्यक है।

7. **पर्यावरणीय शिक्षा के उद्देश्य एवं लक्ष्य**– वर्तमान युग में भारत के तीव्र सामाजिक, प्रौद्योगिक व आर्थिक विकास के साथ–साथ कहीं न कहीं मनुष्य पर्यावरण को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से क्षति पहुंचा रहा है। यदि समय रहते हमने पर्यावरण के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण न अपनाया तो भविष्य में जनमानस का जीवन ही नही वरन् समस्त जीवधारियों का जीवन संकटग्रस्त हो सकता है। इसी समस्या को ध्यान में रखते हुए आज पर्यावरण शिक्षा की आवश्यकता और अधिक बढ़ गयी है। बालक/बालिकाओं की शिक्षा के विभिन्न स्तरों में पर्यावरण शिक्षा को सम्मिलित किया जाना महत्वपूर्ण हो गया है। पर्यावरण शिक्षा द्वारा बालकों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाने एवं पर्यावरण के प्रति उनके व्यवहार एवं विचारों को अनुकूल करने में सहायता मिलती है साथ ही यह जनमानस को पृथ्वी उष्मायन (ग्लोबल वार्मिंग) के कारणों एवं उसके दुष्प्रभावों के विषय में जागरूक बनानें का कार्य करती है।

8. **उद्देश्य–** पर्यावरणीय शिक्षा के प्रायः निम्नलिखित उद्देश्य है–

1. **ज्ञान–** सभी व्यक्तियों को सम्पूर्ण विश्व में घटित हो रहे पर्यावरण विरोधी कृत्यों तथा उससे उत्पन्न होने वाली समस्याओं के विषय में समुचित जानकारी प्राप्त करने में सहायता प्रदान करना।
2. **जागरूकता**– जनमानस में पारिस्थितिकी संकट के कारणों तथा उनके दुष्प्रभावों के प्रति जागरूकता एवं संवेदनशीलता विकसित करने में सहायता प्रदान करना।
3. **कौशल–** पर्यावरण असन्तुलन से उत्पन्न समस्याओं के समाधान के लिए जनमानस में विभिन्न कौशलों का विकास करना जिसके द्वारा वे पर्यावरण से अनुकूल सांमजस्य स्थापित कर सकें।
4. **अभिवृत्ति–** जनमानस में पर्यावरण के प्रति संवेदनशीलता विकसित करना जिससे वे प्रकृति के प्रति प्रेम की भावना, उसके संरक्षण, सुधार एवं सामाजिक मूल्यों के विकसित करने के लिए प्रेरित हो सकें।
5. **सहभागिता**– मनुष्यों को पर्यावरण के प्रति उसके कर्तव्यों, उत्तरदायित्वों का बोध कराना पर्यावरण संरक्षण में उसकी सहभागिता सुनिश्चित करना।

9. **पर्यावरणीय शिक्षा की शिक्षण विधियाँ तथा साधन**– शिक्षण विधियाँ निम्नवत हैं– 1. छोटी सामूहिक प्रयोजनाएँ, 2. कक्षा वाद–विवाद, 3. बाह्य अध्ययन, 4. क्षेत्र भ्रमण, 5. अनुकरण एवं खेल, 6. प्रदर्शनियों का आयोजन, 7. प्रकृति अध्ययन।

10. **साधन/निष्कर्ष–**

1. **मुद्रित सामग्री**– पुस्तकें, पोस्टर, चार्ट, सरकारी प्रकाशन, वार्षिक प्रतिवेदन, सरकारी नीतियाँ एवं पत्र–पत्रिकाएँ।
2. **स्थानीय साधन**– जल तथा वायु को प्रदूषित करने वाले कारकों, जल संरक्षण, एवं जैव विविधिता आदि से बच्चों को अवगत कराना।

3. **श्रव्य–द्रव्य साधन**– टी0वी0, रेडियो, फिल्म, शैक्षिक टेलिविजन, नुक्कड़ नाटक आदि द्वारा पर्यावरण जागरूकता कार्यक्रम प्रस्तुत करना।

इन साधनों का प्रयोग करके छात्रों को अपने परिवेश से परिचित कराने के लिए प्रोत्साहित किया जाना चाहिए और उनके कार्य योजना की एक रूपरेखा भी तैयार की जानी चाहिए। सामाजिक भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए पर्यावरण शिक्षा की अत्यधिक आवश्यकता है। इसलिए प्राथमिक स्तर की भाँति शिक्षा के अन्य सभी स्तरों पर भी पर्यावरण शिक्षा को एक पाठ्यक्रम के रूप में समेकित किया जाना चाहिए और छात्रों को बचपन से ही प्रकृति के बारे में अवगत कराना एक सही विकल्प है।

संदर्भ

1. भरूचा, ई0 (2005) टेक्स्टबुक ऑफ इनवायरन्मेन्टल, स्टडीज, यूनिवर्सिटी प्रेस प्राइवेट लिमिटेड, इण्डिया।
2. शर्मा, पी0 डी0(2004) इकोलॉजी एण्ड इननवायरन्मेन्ट, रस्तोगी पब्लिकेशन, मेरठ।
3. बिहारी, लाल रमन(2016) शिक्षा के दार्शनिक एवं समाजशास्त्रीय सिद्धान्त, रस्तोगी पब्लिकेशन्स, मेरठ।
4. सुखिया, एस0 पी0 एवं गोयल, एम0 के0(2016) शैक्षिक प्रशासन, प्रबन्धन, पर्यावरण शिक्षा एवं स्वच्छता, अग्रवाल पब्लिकेशन।